प्रकृति में है सभी व्याधियों का निदान, सांची विवि में समन्वित चिकित्सा कार्यशाला का दूसरा दिन

मौजूदा चिकित्सा प्रणालियों के समन्वय से एक संपूर्ण चिकित्सा दर्शन विकसित करने के उद्देश्य से सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्यन विश्वविद्यालय में जारी समन्वित चिकित्सा राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन नेचुरोपैथी, होमियोपैथी, सिद्धा और सोआ रिग्पा के विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे। बीमारी की उत्पत्ति, इलाज का दर्शन और हीलिंग के सिद्धांतों पर सभी विशेषज्ञों ने विचार रखते हुए समन्वय के सूत्र भी दिए।

सुबह के सत्र में नेचुरोपैथी पर राष्ट्रीय नेचुरोपैथी संस्थान, पुणे के पूर्व निदेशक डॉ बाबू जोसेफ ने कहा कि उपवास शरीर को स्वस्थ करने का सबसे अच्छा तरीका है लेकिन उपवास मतलब मन, शरीर , दिमाग और शारीरिक कार्य को पूर्णत छोड़ना है नाकि सिर्फ चुनिंदा भोजन का त्याग। डॉ ज्योति केसवानी का कहना था कि प्राकृतिक नियमों का पालन ना करना ही व्याधि की उत्पत्ति का कारण है और प्रकृति में जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश तत्व शरीर को संचालित करते है और इनका संतुलन बिगड़ना ही बीमारी की आहट है। उन्होने कहा कि शरीर खुद को ठीक करने में सक्षम है और नेचुरोपैथी में सिर्फ शरीर को खुद से हीलिंग में मदद की जाती है। डॉ विवेक भरतिया ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए पंचमार्ग है जिसमें दो वक्त के खाने में एक वक्त फल, रोजाना 3 लीटर पानी पीना, रोजाना एक्सरसाइज, हफ्ते में एक दिन उपवास और प्रार्थना शामिल है।

होमियोपैथी में डॉ कुमार धवले ने इसे इलाज की सबसे नई पद्धति बताया जो सिर्फ 250 साल पुरानी है। उन्होने इलाज का दर्शन बताते हुए कहा कि उनकी पैथी बीमारी के लक्षणों के मानकीकृत आधार पर इलाज का तरीका तय करती है। उन्होने शरीर की जीवशक्ति और दवा की क्षमता और सान्द्रता के समन्वय की भी बात की।

सिद्ध प्रणाली पर बात करते हुए वर्ल्ड सिद्ध ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ सेल्वा शनमुगम ने बताया कि उनकी पद्धति भी पांच तत्वों पर काम करती है और 96 आधारभूत सिद्धांत पर चलती है जिसे मूलत वली या वायु, अइज़म और अयाम में बांटा जाता है और इनका असंतुलन ही बीमारी की वजह है। सिद्धा प्रणाली के जरिये उन्होने सिरोयसिस और अन्य बीमारियों के सफल इलाज के प्रमाण भी प्रस्तुत किए।

कार्यशाला में तिब्बत की प्राचीन चिकित्सा प्रणाली का प्रतिनिधित्व धर्मशाला से आए डॉ नामग्यान क्यूसार और राष्ट्रीय सोआ रिग्पा संस्थान लेह से आए वैज्ञानिक डॉ पद्मा गुरमीत ने किया। उन्होने कहा कि सोआ रिग्पा भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के आधार पर इलाज की तिब्बती पद्धति है लेकिन आज कैंसर, ह्रदयरोग एवं अन्य असाध्य रोगों में भी इसके परिणाम चमत्कारिक है। उन्होने कहा कि सोआ रिग्पा इस मूल सिद्धांत पर कार्य करती है सभी कुछ बदलने वाला है और हमारी अनभिज्ञता या अज्ञान ही किसी बीमारी का सबसे बड़ा कारण है।

समन्वित चिकित्सा पर कार्यशाला के अंतिम दिन योग और रेकी प्रणाली पर सेशन होंगे एवं समापन होगा। सांची विवि का समन्वित चिकित्सा केंद्र इस कार्यशाला के माध्यम से सभी मौजूदा चिकित्सा प्रणालियों के बीच एक समन्वयकारी सरल, सुगम और सर्वसुलभ चिकित्सा तंत्र विकसित करना चाहता है।